Vol. 15, Issue: 03, March: 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

पं० श्रीराम शर्मा की विचार क्रांतिः एक सैद्धान्तिक विवेचन

(स्वतंत्रता के बाद भारतीय सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में)

DOI: https://doi.org/10.63345/ijre.v15.i3.2

डा० सचिन कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)

डी.ए.वी. कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.), भारत

सार

स्वतंत्रता के उपरांत भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती केवल राजनीतिक व्यवस्था का संचालन नहीं थी, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा नैतिक दृष्टि का पुनर्गठन भी था। औपनिवेशिक मानसिकता, भौतिकतावादी विकास मॉडल और सामाजिक विघटन ने भारतीय समाज को वैचारिक संकट की स्थिति में पहुँचा दिया था। इस वैचारिक संकट से निकालने में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित विचार क्रांति की अवधारणा एक गहन सैद्धांतिक समाधान प्रस्तुत करती है। इस शोध पत्र के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद भारतीय सांस्कृतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में विचार क्रांति को एक चेतना-आधारित परिवर्तन प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शोध पत्र में यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि आचार्य श्रीराम शर्मा की विचार क्रांति व्यक्ति के अंतःकरण से प्रारम्भ होकर समाज और राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनर्निर्माण तक विस्तृत होती है।

बीज शब्द: विचार क्रांति, स्वतंत्रता, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, नैतिक मूल्य

शोध का उद्देश्य: आजादी के पश्चात मानव जीवन में नैतिक मूल्यों में गिरावट के कारण सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता और सांस्कृतिक अस्मिता का जो संकट उत्पन्न हो गया था। उस संकट से निजात दिलाने के हेतु आचार्य जी ने भारतीय दर्शन, वेद-उपनिषद, गीता को एक माध्यम बनाकर एक विचार क्रांति की मशाल जलायी।

सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों और मानसिकता परिवर्तन में विचार क्रांति की उपयोगिता का मूल्यांकन करने का प्रयास भी इस शोधपत्र का उद्देश्य रहेगा।

शोध विधि: प्रस्तुत शोधपत्र विश्लेषात्मक एवं वर्णनात्मक विधि पर आधारित है। इस शोधपत्र में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। इन स्रोतों का संदर्भ ग्रहण करते हुए वर्णनात्मक व्याख्या तथा सार्थक निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या:

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने एक ऐसे संक्रमणकाल में प्रवेश किया, जहाँ राजनीतिक दासता का अंत तो हो चुका था, किंतु मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर स्वतंत्रता अभी अधूरी थी। उपनिवेशवादी शासन ने भारतीय समाज में आत्महीनता, उपभोक्तावाद और नैतिक भ्रम को जन्म दिया। स्वतंत्रता के बाद विकास की दौड़ में भारतीय समाज ने भौतिक उपलब्धियों को प्राथमिकता दी, जबकि सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्य हाशिये पर चले गए।1

श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस स्थिति को गहराई से समझते हुए यह प्रतिपादित किया कि समाज की वास्तविक समस्याएँ बाह्य नहीं, बल्कि आंतरिक और वैचारिक हैं। उनके अनुसार जब तक मनुष्य की सोच, दृष्टि और जीवन-मूल्य परिवर्तित नहीं होंगे, तब तक कोई भी सामाजिक या राजनीतिक सुधार स्थायी नहीं हो सकता। इसी चिंतन से विचार-क्रांति की अवधारणा विकसित हुई, जो उनके सम्पूर्ण दर्शन का केन्द्रीय आधार है। 'हम बदलेंगे—युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा'2

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज ने आधुनिकता और परम्परा के बीच संतुलन साधने का प्रयास किया, किंतु यह प्रयास प्रायः असंतुलित रहा। पश्चिमी जीवनशैली के प्रभाव में भोगवाद, प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ की प्रवृत्तियाँ बढ़ीं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक सम्बन्धों में शिथिलता, नैतिक मूल्यों में गिरावट और सांस्कृतिक अस्मिता का संकट उत्पन्न हुआ। आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार सांस्कृतिक चेतना का तात्पर्य केवल सक्रिय उपस्थिति से है। यदि संस्कृति जीवन-व्यवहार से कट जाती है तो वह केवल प्रतीक बनकर रह जाती है। अतः स्वतंत्रता के बाद भारत में सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के लिए वैचारिक शुद्धि अनिवार्य थी।3

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थान-स्थान पर शक्ति पीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे—संस्कारिता, आस्तिकता, संवर्द्धन एवं जनजाग्रति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र, जो सन् 1980 में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान, शक्तिपीठ, प्रज्ञा मंडल, स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गए।4

आचार्य जी के विचारों को साकार करने के लिए 'हमारा युग निर्माण' सत्संकल्प लिए गए, जिनमें शामिल हैं—

1. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं व विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचार और सत्कर्मों को मानेंगे।

Vol. 15, Issue: 03, March: 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

2. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।5

भारतीय संस्कृति को केवल बाह्य आचार-व्यवहार, परम्पराओं या अनुष्ठानों तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह मूलतः एक मूल्य आधारित जीवन दृष्टि है, जो मनुष्य के विचार, चरित्र और सामाजिक दायित्वों को दिशा प्रदान करती है। इसमें नैतिकता, कर्तव्यबोध, संयम, सेवा और सहअस्तित्व जैसे तत्व केन्द्रीय स्थान रखते हैं। जब ये मूल्य सामाजिक जीवन में क्षीण होने लगते हैं, तब संस्कृति भी अपना संतुलन खो देती है। ऐसे संदर्भ में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की विचार क्रांति को भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण का एक सशक्त वैचारिक प्रमाण माना जा सकता है, क्योंकि यह संस्कृति को बाहरी रूपों में नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना और मूल्यों के स्तर पर पुनर्स्थापित करने पर बल देती है।6

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की विचार क्रांति किसी राजनीतिक आन्दोलन या तात्कालिक विद्रोह का रूप नहीं है। यह एक दीर्घकालिक, शांत और गहन चेतनात्मक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य मनुष्य की सोच को परिष्कृत करना है। उनके अनुसार विचार मनुष्य के चरित्र, कर्म और सामाजिक आचरण की आधारशिला होते हैं।

आचार्य जी ने विचारों को ऊर्जा का स्रोत माना। सकारात्मक, परमार्थपरक और मूल्यनिष्ठ विचार व्यक्ति को सृजनशील बनाते हैं, जबकि नकारात्मक और स्वार्थपरक विचार सामाजिक विघटन का कारण बनते हैं। विचार-क्रांति का लक्ष्य नकारात्मक मानसिक प्रवृत्तियों का परिष्कार कर उन्हें मानव कल्याण की दिशा में प्रवाहित करना है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज के समक्ष उत्पन्न वैचारिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक संकट के समाधान हेतु पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित विचार क्रांति का उद्देश्य मानव चेतना का उत्कर्ष करना है। इस विचारधारा का मूल लक्ष्य मनुष्य में अंतर्निहित दैवीय गुणों का विकास कर जीवन को मूल्यनिष्ठ एवं समाजोन्मुख बनाना है, जिससे धरती पर सद्भाव, समरसता और सांस्कृतिक संतुलन की स्थापना हो सके।

विचार क्रांति स्वस्थ शरीर, शुद्ध मन तथा संतुलित समाज के निर्माण को अनिवार्य मानती है। इसके अन्तर्गत आत्मकेन्द्रित दृष्टिकोण के स्थान पर सर्वहित और विश्व-बन्धुत्व की भावना को विकसित करने पर बल दिया गया है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से यह विचारधारा व्यक्ति को व्यापक मानवता से जोड़ती है।

आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार समाज परिवर्तन की प्रक्रिया व्यक्ति-निर्माण से प्रारम्भ होती है, जो आगे चलकर परिवार निर्माण और समाज-निर्माण का रूप लेती है। इसी क्रम में नैतिक, बौद्धिक तथा सामाजिक स्तर पर चेतना परिवर्तन आवश्यक है, जिसे वे सच्ची क्रांति का आधार मानते हैं। विचार क्रांति का उद्देश्य किसी राजनीतिक आंदोलन की भाँति तात्कालिक परिवर्तन नहीं, बल्कि धर्मतंत्र आधारित लोक-शिक्षण के माध्यम से जनमानस में स्थायी वैचारिक परिवर्तन लाना है।7

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित विचार क्रांति को केवल सामाजिक सुधार की योजना नहीं माना जा सकता, बल्कि यह मानव चेतना के स्तर पर परिवर्तन की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। इस विचारधारा के अनुसार समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं का मूल कारण बाह्य परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि व्यक्ति की दूषित सोच और मूल्य विस्मृति है। इसलिए आचार्य जी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को व्यक्ति के अंतःकरण से आरंभ करने पर बल देते हैं। विचार-क्रांति का उद्देश्य मनुष्य के चिंतन को स्वार्थपरता से ऊपर उठाकर कर्तव्य, नैतिकता और सामूहिक उत्तरदायित्व की दिशा में प्रवाहित करना है। इस प्रकार यह क्रांति किसी तात्कालिक आन्दोलन के स्थान पर दीर्घकालिक सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया बन जाती है।8

उत्तर स्वतंत्रता काल में भारत को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा—भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, नैतिक पतन और सांस्कृतिक भ्रम—उनका मूल कारण वैचारिक असंतुलन था। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का मानना था कि कानून और शासन प्रणाली इन समस्याओं को नियंत्रित कर सकती है किंतु उनका स्थायी समाधान नहीं दे सकती।

विचार-क्रांति इन चुनौतियों का समाधान व्यक्ति के भीतर से आरंभ करती है। जब व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होता है और जीवन को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है, तब समाज में स्वतः सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज के सांस्कृतिक और नैतिक स्तर पर विरोधाभास से घिरे होने के फलस्वरूप भौतिक प्रगति और आधुनिकता की दौड़ में इसकी परम्परागत मूल्य प्रणाली कमजोर पड़ने लगी। विचार-क्रांति इस सांस्कृतिक संकट को केवल सामाजिक समस्या नहीं बल्कि चेतना के पतन के रूप में देखती है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार जब व्यक्ति का चिंतन दिशाहीन हो जाता है, तब संस्कृति भी केवल औपचारिकता बनकर रह जाती है। इसलिए स्वतंत्रता के बाद भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के लिए वैचारिक शुद्धि और मूल्य आधारित सोच का विकास अनिवार्य है, जिसे विचार-क्रांति संभव बनाती है।9

विचार क्रांति की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए इसे एक आदर्श सामाजिक संरचना के लघु मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस प्रकार किसी विशाल निर्माण-कार्य से पूर्व उसका प्रारूप तैयार किया जाता है, उसी प्रकार भावी समाज के पुनर्निर्माण हेतु एक व्यवहारिक उदाहरण आवश्यक माना गया है। इस मॉडल का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक प्रतिपादन न होकर युग परिवर्तन की प्रक्रिया को क्रियात्मक रूप में प्रदर्शित करना है। इसके अंतर्गत जनमानस में युगचेतना का प्रसार, कुसंस्कारों एवं सामाजिक विकृतियों का परिमार्जन तथा प्रतिभा, प्रमाणिकता और पुरुषार्थ का विकास प्रमुख आधार माने गए हैं। यह प्रतिपादित किया गया है कि वर्तमान परिस्थितियों में केवल विचार प्रस्तुत कर देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु संगठित और अनुकरणीय प्रयास अपेक्षित हैं। नवीन युग की स्थापना के लिए परंपरागत

Vol. 15, Issue: 03, March: 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

जड़ताओं से मुक्त होकर सकारात्मक, सृजनात्मक और सामूहिक प्रयासों को अपनाना आवश्यक है। इस प्रकार विचार क्रांति को एक समन्वित, चरणबद्ध और व्यवहारिक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में निरूपित किया गया है।10

विचार क्रांति का पहला और सबसे महत्वपूर्ण आयाम है—नैतिक जागरण। आचार्य जी के अनुसार नैतिकता बाहरी नियंत्रण नहीं, बल्कि आंतरिक अनुशासन है। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और कर्तव्यबोध जैसे गुण विचार-क्रांति के माध्यम से विकसित होते हैं।

श्रीराम शर्मा का आध्यात्मिक दृष्टिकोण कर्मप्रधान और समाजोन्मुखी है। विचार-क्रांति व्यक्ति को आत्मकेन्द्रितता से ऊपर उठाकर व्यापक मानवता से जोड़ती है। इससे सेवा, करूणा और सह-अस्तित्व की भावना का विकास होता है।

विचार-क्रांति सामाजिक बुराइयों के लक्षणों से नहीं, उनके कारणों से संघर्ष करती है। जातिवाद, लैंगिक असमानता और हिंसा जैसी समस्याओं का मूल कारण विकृत मानसिकता है, जिसे विचार क्रांति परिवर्तित करने का प्रयास करती है।

विचार क्रांति भारतीय संस्कृति को रूढ़िवाद से मुक्त कर उसके मूल मानवीय मूल्यों को पुनःस्थापित करती है। इससे संस्कृति एक जीवंत, गतिशील और समकालीन शक्ति के रूप में उभरती है। विचार-क्रांति का सांस्कृतिक आयाम इस तथ्य पर आधारित है कि संस्कृति का वास्तविक स्वरूप व्यक्ति के विचारों और आचरण में परिलक्षित होता है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य मानते हैं कि जब विचार स्वार्थ, हिंसा और भोगवाद से मुक्त होकर सेवा, संयम और सहअस्तित्व की ओर उन्मुख होते हैं, तभी संस्कृति जीवंत बनती है। इस दृष्टि से विचार-क्रांति स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध होती है। यह प्रक्रिया परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए संस्कृति को चेतना-आधारित रूप में पुनः प्रतिष्ठित करती है।11

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार युगनिर्माण का अर्थ केवल संस्थागत परिवर्तन नहीं, बल्कि चेतना का उत्कर्ष है। विचार-क्रांति इस युग-निर्माण की आधारशिला है, क्योंकि यह व्यक्ति को मूल्यनिष्ठ, उत्तरदायी और चरित्रवान बनाती है। ऐसे व्यक्तियों से ही सशक्त समाज और राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

आचार्य जी के अनुसार, ''युग निर्माण विद्यालय का प्रधान विषय जीवन जीने की कला, चरित्र गठन, मनोबल, विवेक-जागरण, समाज निर्माण जैसे तथ्यों का संगोपांग शिक्षण और अभ्यास कराना है।''12

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रयासों को यदि समग्र रूप में देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि उनका मूल लक्ष्य किसी एक अनुष्ठान, संस्था या कार्यक्रम तक सीमित नहीं था, बल्कि मानव चेतना में दीर्घकालिक परिवर्तन लाना था। उनके द्वारा किए गए विविध प्रयोग इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि समाज में वास्तविक परिवर्तन बाह्य संरचनाओं से नहीं, बल्कि विचारों की दिशा बदलने से संभव होता है। यही दृष्टि उनके विचार क्रांति दर्शन का आधार बनती है।

आचार्य जी मानते थे कि विचारों का परिवर्तन तब तक प्रभावी नहीं हो सकता, जब तक वह व्यापक जनसमुदाय तक न पहुँचे। इसी कारण उनके प्रयासों में जन-संचार और लोक-शिक्षण को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। उन्होंने आध्यात्मिक साधनाओं को केवल व्यक्तिगत मोक्ष से जोड़कर नहीं देखा, बल्कि उन्हें सामाजिक चेतना के विस्तार का माध्यम बनाया। इस संदर्भ में यज्ञ को वे एक ऐसे प्रतीकात्मक प्रयोग के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसका उद्देश्य राष्ट्र की सामूहिक मानसिकता को जाग्रत करना है। उनके विचार में अश्वमेध यज्ञ किसी पारंपरिक कर्मकांड की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि एक चेतना आधारित प्रक्रिया है, जो समाज में निहित क्षमताओं को राष्ट्रहित की दिशा में सक्रिय करती है। यह प्रक्रिया प्रतिभागियों के भीतर आत्मसंयम, त्याग और निरंतर साधना की भावना को विकसित करती है, जिससे व्यक्ति केवल व्यक्तिगत उत्कर्ष तक सीमित न रहकर सामाजिक उत्तरदायित्व को भी आत्मसात करता है। इस प्रकार यह प्रयोग विचार-क्रांति के उस पक्ष को सशक्त करता है जिसमें व्यक्ति निर्माण के माध्यम से समाज-निर्माण का लक्ष्य निहित है।

ऐतिहासिक संदर्भों का प्रयोग करते हुए आचार्य श्रीराम शर्मा यह संकेत देते हैं कि प्राचीन काल में भी सामूहिक चेतना को संगठित करने के प्रयास किए गए थे, जिनका उद्देश्य राजनीतिक विजय से अधिक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता था। इसी परम्परा को वे आधुनिक संदर्भ में नए वैचारिक रूप में प्रस्तुत करते हैं। आगे चलकर उन्होंने यज्ञ की व्याख्या इन्द्रिय-परिष्कार और आंतरिक अनुशासन के रूप में की, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विचार-क्रांति का अंतिम लक्ष्य बाह्य विस्तार नहीं, बल्कि मानसिक और नैतिक परिष्कार है। इस प्रकार, आचार्य जी के विचार क्रांति के व्यावहारिक आयाम को सामने लाते हैं, जिसमें आध्यात्मिक साधना और सामाजिक दायित्व एक-दूसरे के पूरक रूप में विकसित होते हैं।13

व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए बौद्धिक सजगता, आत्मचेतना तथा विवेकपूर्ण निर्णय-क्षमता को अनिवार्य तत्व माना गया है। अरस्तू (Aristotle) ने अपनी कृति *Nicomachean Ethics* में प्रैक्टिकल विज़डम (Phronesis) को नैतिक एवं व्यक्तिगत उत्कृष्टता का आधार माना है, जिसके अभाव में ज्ञान का उचित उपयोग संभव नहीं।14 इसी प्रकार आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों में भी बौद्धिक परिपक्वता को जीवन की सफलता और सामाजिक प्रभावशीलता से जोड़ा गया है।15 यह धारणा कि बौद्धिक विकास केवल साधन सम्पन्न वर्ग के लिए सुलभ है, ऐतिहासिक दृष्टि से असंगत प्रतीत होती है। स्वामी विवेकानन्द ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसकी अन्तर्निहित संभावनाओं में निहित है, न कि बाह्य संसाधनों में।16 अनेक महान् व्यक्तित्व विपरीत परिस्थितियों से उभरकर आए,

Vol. 15, Issue: 03, March: 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

जिससे यह सिद्ध होता है कि जिज्ञासा, इच्छाशक्ति और सतत् प्रयत्न ही उन्नति के वास्तविक कारक हैं।

हालांकि बौद्धिक क्षमता का सकारात्मक परिणाम तभी संभव है जब वह विवेक, नैतिकता और संतुलित मानसिकता द्वारा निर्देशित हो।17 कोहलबर्ग के नैतिक विकास पद्धति के अनुसार, उच्च स्तर की नैतिक चेतना के बिना ज्ञान और शक्ति का दुरुपयोग संभव है। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि शिक्षित एवं समर्थ व्यक्तियों द्वारा किए गए दुष्कृत्य सामाजिक स्तर पर अधिक व्यापक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। अतः व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में बौद्धिक प्रगति के साथ नैतिक परिपक्वता और विवेकशीलता का समन्वय आवश्यक है।18

निष्कर्ष

प्रस्तुत सैद्धांतिक विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की विचार क्रांति स्वतंत्रता के बाद भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनर्निर्माण की एक व्यापक और दूरदर्शी अवधारणा है। यह क्रांति किसी बाह्य दबाव पर नहीं, बल्कि आंतरिक जागरण पर आधारित है। आज के समय में, जब भारत पुनः सांस्कृतिक आत्मबोध की खोज में है, विचार क्रांति एक प्रासंगिक और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है।

यह प्रतिपादित किया जाता है कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत को केवल एक भौगोलिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के वैचारिक एवं सांस्कृतिक सेतु के रूप में समझा गया है। विभिन्न संकटों और ऐतिहासिक उथल-पुथलों के बावजूद भारतीय सांस्कृतिक परम्परा ने निरंतर आत्मपुनरुत्थान की क्षमता का परिचय दिया है। समकालीन वैश्विक संदर्भ में यह धारणा व्यक्त की जाती है कि मानव गरिमा, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक संतुलन की पुनर्स्थापना में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, भारत की सांस्कृतिक चेतना भविष्य में वैश्विक शांति, नैतिक पुनर्जागरण तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन में योगदान की सामर्थ्य रखती है।

यह अध्ययन स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में उत्पन्न सांस्कृतिक, नैतिक और वैचारिक संकट को समझने में सहायक है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की विचार-क्रांति को सैद्धांतिक ढाँचे में प्रस्तुत कर यह शोध समकालीन भारत के लिए एक वैकल्पिक विकास-दृष्टि प्रदान करता है। यह शोध समाजशास्त्र, दर्शन, सांस्कृतिक अध्ययन तथा भारतीय चिंतन पर कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ सूची

- आचार्य श्रीराम शर्मा, *भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व*, मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान, 1995, पृ०सं०-14
- आचार्य श्रीराम शर्मा, *हमारी वसीयत और विरासत*, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, 2022, पृ०सं०-224
- पं० श्रीराम शर्मा वाङ्मय, *भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व*, मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान, 1995, पृ०सं०-319
- पं० श्रीराम शर्मा वाङ्मय, *भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व*, मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान, 1995, पृ०सं०-08
- पं० श्रीराम शर्मा वाङ्मय, *सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक: सेवाधर्म के उपासक*, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृ०सं०-327
- पं० श्रीराम शर्मा वाङ्मय, *भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व*, मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान, 1995, पृ०सं०-24
- सिंह, मधु, इप्सित प्रताप सिंह और आशीष कुमार, "An Analysis of the Literature and Life of Pandit Shriram Sharma Acharya", देव संस्कृत इंटरडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल (DSIIJ), खंड-26, 2025, पृ०सं० 13-19, DOI: 10.360181/...
- सिंह, प्रज्ञा और दीपक सिंह, "श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित विचारक्रांति का सम्प्रत्यय, महत्व एवं अनुप्रयोग", Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal (DSIIJ), खण्ड-22, 2023, पृ०सं० 61-62
- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, *अमृतवचन जीवन के सिद्ध सूत्र*, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, 2022, पृ०सं०-69
- पाल, मेघा, "Thought Revolution through Bhava Samvedana: In the View of Pt. Shriram Sharma Acharya", Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal (DSIIJ), खण्ड-2, 2013, पृ०सं० 77-83
- बिहारिया, नम्रता और अविनाश बिहारिया, "पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य-उन्मुखीकरण पर प्रभाव: एक अध्ययन", Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal (DSIIJ), Vol. 1, 2012, पृ०सं०-22
- सिंह, नेहा और ज्वलंत भवसार, "अश्वमेध यज्ञ: जनसंख्या का एक अनोखा प्रयोग", Interdisciplinary Journal of Yagya Research, खण्ड-7, अंक-2, 2024, पृ०सं०-14
- Aristotle, *Nicomachean Ethics*, Oxford University Press, 2009

Vol. 15, Issue: 03, March: 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

- Gardner, H., *Frames of Mind: The Theory of Multiple Intelligences*, 1983
- Vivekananda, S., *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Vol. 1, 1999
- Kohlberg, L., *Essays on Moral Development*, Vol. 1, 1981
- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, "सद्गुण बढ़ाए सुसंस्कृत बने", युग निर्माण योजना ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2015, पृ०सं०-19